भारत में महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम

प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे
डॉ. नियाज़ अहमद अन्सारी
श्रीमती ममता जांगिड
डॉ. आर. एस. भाकुनी

भारती पब्लिकेशन्स
नई दिल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षितः संपादक

पुस्तक शीर्षकः भारत में महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम

संपादक : प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे, डॉ. नियाज़ अहमद अन्सारी
श्रीमती ममता जांगिड एवं डॉ. आर. एस. भाकुनी

प्रथम संस्करणः २०२१

ISBN: 978-93-90818-29-7

प्रकाशकः
भारती पब्लिकेशन्स
४८१६/२४, तीसरी मंजिल, अंसारी रोड
दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२
फोन नं.: ०११-२३२४७५३७, ९८९९८९७३८१
ई-मेलः bhartipublications@gmail.com
Website : www.bhartipublications.com
मुद्रक : एस पी कौशिक इंटरप्राइजेज, दिल्ली

पुस्तक में दी गई विषय वस्तु पूर्ण रूप से लेखक के अपने विचार हैं। संपादक एवं प्रकाशक किसी भी विषय वस्तु के लिए जिम्मेदार नही हैं। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा किसी के द्वारा पुनरुत्पादित या प्रेषित बिना अनुमति के नहीं किया सकता है। इस प्रकाशन के संबंध में किसी भी व्यक्ति द्वारा अनधिकृत कार्य या नुकसान के लिए आपराधिक अभियोजन के लिए वह व्यक्ति उत्तरदायी होगा।

संपादकीय

कोविड-१९ महामारी ने मार्च २०२० से लगातार इस जटिलतम समय में समाज के सभी वर्गों की अग्निपरीक्षा ली है। इस प्रस्तुत पुस्तक के संपादको ने अपने अध्यापन कार्य के अलावा अपने बाकी समय का सदुपयोग करने का बीड़ा उठाया और देशभर के शिक्षकों से उनके मौलिक लेख आमंत्रित कर *'भारत में महिला सशक्तिकरण के विविध आयाम'* के नाम से संपादित पुस्तक प्रकाशित करने का संकल्प लिया। पिछले ६ माह के अनवरत श्रम के परिणामस्वरूप यह पुस्तक पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता अनुभव करने का शुभावसर मिलना ईश्वरीय कृपा का ही प्रतिफल है।

वास्तव में यह पुस्तक इसलिए भी महत्वपूर्ण बन गई है कि इसमें लेखकों ने भारतीय समाज की आधी दुनिया की विविध समस्याओं और उनकी नवीनतम उपलब्धियों सहित उनके उज्जवल भविष्य की अनंत संभावनाओं की सोदाहरण विवेचना की गई है। आज उदारीकरण और निजीकरण जनित परिस्थितियों ने महिलाओं के समक्ष नए सामाजिक एवं आर्थिक दबाव पैदा किये है और कई स्थापित परम्पराएं टूटने से अब महिला जगत से दोहरी-तिहरी भूमिका की अपेक्षा की जाने लगी है। एक ओर तो भारतीय महिलाओं को परम्परागत रूपों में उन्हें ममतामयी मां, बहिन, बेटी एवं बहू की भूमिका में देखना पंसद किया जा रहा है तो दूसरी तरफ उनकी मेहनत और आय से घर की अर्थव्यवस्था का पहिया भी चलाने पर जोर दिया जाने लगा है। इससे वे नई परिस्थितियों से तालमेल बनाकर समाजोत्थान में सक्रिय योगदान जैसे दुरूह कार्यों को अंजाम दे रही हैं।

हमें पूर्ण आशा है कि इसमें सम्मिलित नवीनतम लेखों-*महिला कैदियों की समस्याएं और उनका समाधान, कृषक महिलाओं की समस्याएं, इक्कीसवीं सदी में नारी की बदलती भूमिका, महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी, महिला साहित्कारों का साहित्यिक योगदान, महिलाओं की स्वास्थ्य की स्थिति, नारी संघर्ष का*

9	**आदिवासी समाज के उत्थान में महाश्वेता देवी का साहित्यिक योगदान** डॉ. सुरेखा जवादे एवं शुभांगी सिंह	66-71
10	**भारतीय राजनीति में महिलाओं की भागीदारी** प्रो. (डॉ.) सी. बी. भांगे एवं ममता जांगिड़	72-83
11	**पंचायतीराज और महिला सशक्तिकरण** कांता वर्मा	84-92
12	**कृषि रोजगार से संबंधित महिला रोजगार की समस्याएं** डॉ. खुदैजा परवीन अंसारी एवं प्रो. अनवर खान	93-98
13	**लैंगिक विभिन्नता के कारण और समाधान** कु. कविता	99-103
14	**नारी संघर्ष का इतिहास** डॉ. कुन्ती साहू एवं डॉ. राजकुमार महोबिया	104-109
15	**नारी शिक्षा के बारे में गांधी जी के विचार** डॉ. गीता जोशी	110-115
16	**महिलाओं के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का योगदान** डॉ. राजेश मौर्य एवं प्रो. जे. पी. मित्तल	116-128
17	**महिलाओं के सर्वान्गीण विकास में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की भूमिका** डॉ. एम.एन. स्वामी एवं डॉ. एन. ए. अन्सारी	129-135
18	**भारतीय महिलाओं की दशा** डॉ. माया शुक्ला	136-143
19	**महिला सुरक्षा और असुरक्षा के कारण** डॉ. कचंन ठाकुर	144-150
20	**महिला सबलीकरण में महादेवी वर्मा का योगदान** प्रो. डॉ. हाके महावीर रामजी	151-156
21	**महिला सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका** डॉ. श्रीमती कल्पना वैश्य	157-163
22	**पंचायती राज व्यवस्था में महिला नेतृत्व अनुसूचित जाति की महिलाओं के संदर्भ में** श्री ललन कुमार मंडल	164-172
23	**कामकाजी महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण** डॉ. गुलाम मोहइयुद्दीन, प्रो. ऋषि राज पुरवार एवं प्रो. गुलशेर अहमद	173-178
24	**भारतीय कृषि में महिला श्रमिकों की भूमिका** डॉ. वीरेन्द्र मटसेनिया	179-187
25	**ग्रामीण महिलाओं के विकास में सरकारी योजनाओं की भूमिका : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (रीवा जिले के पहिलपार ग्राम पंचायत के विशेष सन्दर्भ में)** शिव बिहारी कुशवाहा एवं लाल बिहारी कुशवाहा	188-198
26	**लोकतंत्र में महिला सशक्तिकरणः "संतर्क भारत समृद्ध भारत" विकास में कर्त्तव्य बोद्य का केन्द्र बिन्दु** डॉ. हंस कुमार शर्मा	199-215
27	**क्रांतिज्योति सवित्रीवाईफुले - भारत की प्रथम महिला शिक्षिका** लाल मोहन राम	216-220

इसके लिये प्रत्येक व्यक्ति की सोच में बदलाव व कानून का सख्ती से पालन करना जरूरी है। न्यायालयों को इस तरह से प्रकरणों को त्वरित निस्तारित करते हुये दोशियों में दहशत पैदा करनी होगी तभी हम कुछ सीमा तक इस समस्या में निकल पा सकेंगे।

समस्या के मूल में छिपे मनोवैज्ञानिक व सामाजिक व्यवस्था के बिखराव के कारण को भी समझना होगा।

सामाजिक संरचना को मजबूती प्रदान करनी होगी तथा शिक्षा के स्तर में इस तरह बदलाव लाने की आवश्यकता है। की एक दूसरे के सम्मान की रक्षा कर सकें कही न कही हमारी सामाजिक व्यवस्था में आ रहे बदलाव को भी इसके लिये दोषी माना जा सकता है।

किसी भी राष्ट्र की खुशहाली के लिये वहां की महिलाओं का उल्लेखनीय योगदान होता है। वर्तमान समय में महिलाओं के स्तर को सुधारने के लिये शासन प्रशासन विभिन्न संगठनों के साथ-साथ स्वयं महिलाओ को जागरूक होना पड़ेगा, उन्हे अपनी एक पहचान बनाना आवश्यक है।

महिलाओं एवं बालिकाओं के साथ होने वाले हर प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना होगा तभी एक नारी अपने सम्मान के साथ जीवन जी सकती है।

20

महिला सबलीकरण में महादेवी वर्मा का योगदान

प्रो. डॉ. हाके महावीर रामजी
हिंदी विभाग
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
गंगाखेड जि. परभणी, (महाराष्ट्र)

महा व्यक्तित्ववाली महादेवी वर्मा अपने काव्य को भी युग और परिवेश की अपेक्षानुसार ही एक महाशक्ति से समृध्द कर उसे जीवन्तता प्रदान करती है। प्रसाद का आनंद निराला का आजे तथा पंत का मार्दव जिस कल्याण कारी त्रिशुल का निर्माण करते हैं, उसके तेज को बहुत लम्बे समय तक अपने बाहुबल की मजबूत पकड से सेहेज रहने की शक्ति महादेवी ही बनाती है। छायावाद कें जिस "प्रासाद" को ये तीनों कवि मिलकर तैयार करते है, महादेवी वर्मा ही उत्कर्ष काव्य में उसे सजा-संवारकर ऐश्वर्य प्रदान करती है । महादेवी मानती है कि काव्य ही मानस के सुख-दुखात्मक संवेदनों की ऐसी कथा है जो उक्त संवेदनों को संपूर्ण परिवेश के साथ दूसरे की अनुभूति का विषय बना देती है। महादेवी का कविता-संसार एक तरफ तो परिवेश से सिकत होकर निखार पाता है तो दूसरी ओर एक विशेष परिवेश का निर्माण कर जग को राह दिखाता है।

महादेवी वर्मा को जन्म होली के दिन सन १९०७ ई. में उत्तर प्रदेश के अंतर्गत फर्रुखाबाद नामक नगर में हुआ था। इतकी प्रारंभिक शिक्षा इन्दौर में हुई तथा प्रयाग से मैट्रिक स्कूल में उत्तीर्ण होकर प्रयाग विश्व विद्यालय से ही महादेवी ने संस्कृत में एम.ए. भी किया।

उनके पिता का नाम श्री. गोविन्द प्रसाद वर्मा तथा भक्त हृदयवाली हेमरानी उनकी जन्मदात्री थीं। पिता एम.ए.,एल.एल.बी. कर कचहरी में वकालत करते। वे कर्मनिष्ठ और दार्शनिक प्रकृति के व्यक्ति थे तो माता धार्मिक प्रवृत्ति की एक विदूषी महिला थी। बचपन से ही चित्रकला. संगीतकला तथा काव्यकला में रुचि और पारंगतता हासिल कर लेने वाली महादेवी विद्यार्थी जीवन से ही साहित्य जगत में पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर चुकी थी। सात वर्ष की अवस्था में "आओ प्यारे तारे आओ, मेरे आँगन में बिछ जाओ," जैसी कविता लिखने वाली महादेवी को जीवन और साहित्य दोनो में ही माता-पिता तथा पारिवारिक परिवेश को संस्कार रुप में देखा जा सकता है।

नाजुक मिजाज तथा नफासत पसंद लडकी आँगन लीपने और गेहूँ फटकने से लेकर रसोई बनाने और परोसने तक के कामों में भी सिध्दहस्त थी। सफाई उन्हे अत्यंत प्रिय थी। संस्कार और परिवेश से प्राप्त प्रेरणा एवं प्रतिभा को वे स्वयं स्वीकारते हुए लिखती भी हैं।

"एक व्यापक विकृति के समय निजी संस्कारों के बोझ से जडीभूत वर्ग में मुझे जन्म मिला है। परंतु एक ओर साधनाभूत आस्तिक और भावुक माता तथा दूसरी ओर सब प्रकार की साम्प्रदायिकता से दूर, कर्मनिष्ठ और दार्शनिक पिता ने अपने-अपने संस्कार देकर मेरे जीवन को जैसा विकास दिया, उसमें भावुकता बुध्दि के कठोर धरातल पर, साधना एक व्यापक दर्शनिकता पर और आस्तिकता एक सक्रिय , पर किसी वर्ग या संप्रदाय में न बंधन वाली चेतना पर ही स्थित हो सकती थी। जीवन की पार्श्वभूमि पर माँ से पूजा-आरती के समय सुने गाए मीरा-तुलसी आदि के तथा स्वरचित पदों के संगीत पर मुग्ध होकर मैंने ब्रजभाषा में पदरचना आरंभ की थी।"१

महादेवी पत्र पत्रिकाओ में छपने लगी। काव्य रचना का सृजन अबाध गति से चलता रहा। संम्मेलनों ग्यारहवाँ दर्जा पास करते-करते कविता संम्मेलनों तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेकर सैकडो तमंगो और पुरस्कारों से सुशोभित करते हुए उस समय की प्रचलीत प्रसिध्द कविताएँ प्रकाशित होने लगी तो काव्य मर्मज्ञो का ध्यान भी इस नवीन प्रांजल-प्रतिभा की ओर आकर्षित होने लगा।

नारी शिक्षा, नारी जागृति और नारी आत्म-सम्मान के प्रति सदैव सजग रही है। गरीब विद्यार्थियों की आर्थिक सहायता में उन्हे आनंद मिलता था। सुभद्रा कुमारी चौहान से आपकी प्रगाढ मैत्री थी तो निराला, पंत और प्रसाद के प्रति आत्मीय अगाध-श्रध्दा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने महादेवी के प्रति समादर व्यक्त करते हुए लिखा है, "मेरी प्रयाग-यात्राकेवल संगम-स्नान से पूर्ण नही होती। उसको सर्वथा बनाने के लिए मुझे सरस्वती के दर्शनों के लिए प्रयास महिला-विद्यापीठ भी जाना पडता है।"२

महादेवी वर्षो तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राचार्या रही है। इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली "चाँद" मासिक पत्रिका की संपादिका भी वही है तो साहित्यकारों के साहित्य सृजन हेतु इन्होंने प्रयाग में गंगा तट पर "साहित्यकार संसद" नामक संस्था की स्थापना भी की है। जीवन की विविधता का यही वैशिष्टय महादेवी की साहित्यिक और कलात्मक अभिव्यक्तियों मे भी देखा जा सकता है। कविता, गद्य, चित्र, संगीत , राष्ट्रीय आंदोलन , नारी चेतना आदी आदी कितनेही क्षेत्र है जिनमें वे अपने महियसी जीवन का पुण्यस्पर्श देती हुई उसे अमरता प्रदान करती चली गई। सौंदर्य और माधुर्य की छटा बिखेरती हुई ही प्रकृति-पुत्री महादेवी ११ सितम्बर , सन १९८७ को प्रकृति के आंचल में जा सोई । लेकिन उनका अमर-साहित्य सदैव जागरण का दायित्व निभाता रहेगा। महादेवी की इसी सृजनात्मक अमरता तो अब हम साक्षात्कार करेंगे।

पराधीन भारतवासियों को स्वतंत्रता के स्वागत हेतु संघर्ष की जो राह महर्षि अरविन्द, महात्मा गाँधी, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि महान आत्माओं ने दिखाई उसी पर महादेवी ने भी अथक यात्रा

की। अंधकारमय- क्षितिज निर्मल ज्योति की प्रभा-विकिर्ण करते रहने के लिए उन्होंने मधुर-मधुर तथा अकम्पित दीप की प्रज्वलित जीवन ज्योति को बुझने से ही नहीं रोका अपितु उसे अपनी श्वासें प्रदान कर "सदाजीवि" भी बना दिया। अतः महादेवी का युग-बोध छायावाद के उत्कर्ष का युग-बोध है। कवयित्री के साथ-साथ विद्रोही गद्य लेखिका का दायित्व निभाने वाली महादेवी कुशल चित्रकर्ती भी रही हैं। कविता के भावानुकूल चित्र-योजना करने वाली इस अप्रतिम विदूषी ने हिन्दी , संस्कृत, पालि , प्राकृत, बंगला, गुजराती, उर्दू तथा अंग्रेजी भाषाओं पर पूरे अधिकारसे अपनी ज्ञान-तुलिका का सार्थक प्रयोग किया। आठ वर्ष की अवस्था में जो प्रतिभा इन पंक्तियों का सृजन करती है, उस सर्जनात्मक-व्यक्तित्व के विषय में और कहा भी क्या जा सकता है:-

धुलि से निर्मित हुआ है यह शरीर ,
और जीवन-वर्ति भी प्रभू से मिली अभिराम।
प्रेम का हीतेल भर जो हम बने निःशोक,
तो नया फैले जगत के तिमिर में आलोक।

नारी वर्ग के प्रति हो रहे अत्याचार और अन्याय के विरुध्द आवाज बुलन्द कर उसकी सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं का एक समाज शास्त्री भाँति विश्लेषण विवेचन करने वाली महादेवी की गद्य रचनाओं में गांभीर्य, प्रौढता तथा उनके व्यक्तित्व की ही प्रांजलता देखी जा सकती है। विधवाओं, वेश्याओं और अवैध संतानो के प्रति सहानुभूति के पुण्य अर्पित करने वाली महादेवी, कारण बननेवाले समाज को क्रांति के स्वर में ललकारती भी है। विवेक, दूर-दृष्टि , गहन अध्यवसाय तथा व्यापक एवं विस्तृत अनुभव के आधार पर वे तटस्थ होकर विचार प्रस्तुत करती है। "स्त्री में माँ का रुप ही सत्य वात्सल्य ही शिव और ममता ही सुंदर है। जब वह इन विशेषताओं के साथ पुरूष के जीवन में प्रतिष्ठित होती है तब उसका रिक्त स्थान भर लेना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हो जाता है।" ३

इस प्रकार संगीत, चित्र, काव्य, गीत , रेखाचित्र, संस्मरणात्मक रेखचित्र, निबंध, अनुवाद, काव्यमय चित्र, चित्रमय काव्य तथा चित्रगीत जैसी अनेक विधाऐं जिनमें अन्य कई विधाएँ भी समा जाती है। महादेवी के सृजनमय-व्यक्तित्व की

पहचान है। भाव हो या कला, सभी स्थानों पर महादेवी अप्रतिम है, अतुलनीय है, श्लाघनीय है।

कल्पना , चिंतन और अनुभूती का अद्‌भूत मिश्रण करती हुई आनंद की ओर अग्रसर महादेवी अश्रुमुखी वेदना के कणों कों भी आत्मानन्द के मधु में कर इस शुष्क जग का आद्र-सिंचन कर देती है। संघनतम-अनुभूति की पूर्णतम-तपस्या, जीवन निष्ठा तथा आध्यात्मिक आस्था की ऊर्जा बनकर महादेवी के निष्काम कर्म और द्वंद्वरहित प्रेमभाव का "प्रसाद" तैयार करती है। अहंभाव से उपर उठकर सर्वव्यापी आत्मा की "व्यक्ति रहितः स्थिति विकसित होती है और परमसत्ता के साथ भावनात्मक ऐक्य स्थापित करती हुई असीम प्रेम के दिव्यानन्द तक पहुँच जाती है।

छायावादी साहित्य के जाने-माने अलोचक डह.नगेंद्र ने महादेवीजी की कविता का मूल्यांकन करते हुए कहा भी हैय "महादेवी की काव्य मे हमे छायावाद का शुध्द अमिश्रित रुप मिलता है। छायावाद की अंतर्मूखी अनुभूति, अश दीदी प्रेम जो बाह्य तृप्ति न पाकर आमांसल सौंदर्य की सृष्टि करता है, मानव की प्रकृति के चेतन संस्पर्श, रहस्य-चिन्तन तितली के पंखो और फुलों की पंखुडियों से चुराई हुई कला और इन सबके ऊपर स्वप्न सा पूरा हुआ एक पायवी वातावरण ये सभी तत्व जिसमें धुले मिलते हैं, वह है महादेवी की कविता।" ४

महादेवी कें गीतों में भावों के अनुकूल ही भाषिक व्यवस्था भी बनती चलती है। भाषा गीतों की खन-झुन नयी लय को अपने प्रवाह के संगीत में पिरोती चलती है। विहंगम के मधुर स्वरों की तुलना महादेवी अपनी वीणा के हर मंदिर तार से करती हुई चलती है तो माधुर्य और मादकता का सन्निवेश पल्लवित होता जाता है -

उडा तू छन्द बरसाता,
चला मन स्वप्न बिखराता,
अमित छबि की परिधि तेरी,
अचल रस पार है मेरा।
बिछी नभ में क्या झीनी,

धुली भू में व्यथा भीनी ,
तडित उपहार तेरा, बादलों,
सा प्या है मेरा ।

इसी प्रकार ओर "चिर नीरव" , "सपने जगाती आ" मै "चिर पथिक वेदना का" तथा "मिट चली घटा अधीर" आदि बहुत से गीत देखे जा सकते है।

अतः कह सकते है कि महादेवी गीति मुक्तक लिखने वाली हिंदी साहित्य की अतुलनीय गीत लेखिका है। उनके गीतों में आत्मानुभूति की गहराई, वेदना की व्यापक करूणा, संगीत की मधुर लहरियाँ तथा साहित्यिक स्तर की भावमिश्रित भाषा का अनुपम एवं अद्‌भुत मिश्रण है और इसी के कारण महादेवी का गीति काव्य एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

महादेवी प्रत्येक शब्द को ध्वनि, वर्ण और अर्थ की दृष्टि से नाप तोल और काट-छाँटकर सुक्ष्मतम भावनाओं को कोमलतम कलेवर देती है। व्याकरणिक नियमों से स्वच्छन्द रहने वाली महादेवी कभी शब्दों का अंग-भंग, रुप-परिवर्तन और अंग वार्धक्य कर नए शब्द गढ लेती है तो कभी शब्दों के निरन्तर प्रयोग से उसमें एक विशिष्ट अर्थ कर देती है। "पंत और महादेवी निबंध में छायावाद के जाने माने आलोचक शांतिप्रिय द्विवेदी लिखते है, पंत ने जिस खडी बोली को रमणीयता दी, महादेवी ने उसे मार्मिकता देकर प्राण प्रतिष्ठा कर दी। ताजमहल के भीतर उन्होंने दीपक जला दिया। भाषा के सौंदर्य में पंत बेजोड है, अभिव्यक्ति की मार्मिकता में महादेवी।"५

संदर्भ :- हिंदी साहित्य की विभूतिया :- मनोरमा राजावन, पृष्ठ सं. १२

१) वही पृ. सं. १३

२) वही पृ.सं. १६

३) वही पृ.सं. १८

४) वही पृ.सं. २७

21

महिला सशक्तिकरण में सरकार की भूमिका

डॉ. श्रीमती कल्पना वैश्य

महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय छतरपुर, (म.प्र.)

एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण निश्चित ही सशक्त महिलाओं से हो सकता है क्योंकि महिलाएं ही राष्ट्र की आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती हैं। ''वैदिक काल से वर्तमान तक के भारतीय इतिहास पर दृष्टिपात किया जाए तो जहां वैदिक काल में महिलाओं को सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक समस्त अधिकार प्राप्त थे वही उत्तर वैदिक काल से ब्रिटिश युग तक महिलाओं की स्थिति निरंतर पतन उन्मुख होती गई''१ जिसके कारण देव तुल्य नारी अबला बनकर रह गई। और यही कारण है कि पिछले लगभग डेढ़ शताब्दी से भी ज्यादा लंबे समय से नारी सशक्तिकरण के प्रयास निरंतर किए जा रहे हैं। अह्फिस अह्फ द यूनाइटेड नेशंस हाई कमांड फह्र ह्यूमन राइट के अनुसार महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को शक्ति क्षमता और काबिलियत प्रदान करना है, जिससे वे अपने जीवन स्तर को सुधार कर अपने जीवन की दशा को स्वयं निर्धारित कर सकें।'' महिला सशक्तिकरण एक गतिशील व बहुपक्षीय प्रक्रिया है, जिसके द्वारा महिला